दैनिक भास्कर भीलवाड़ा भास्कर 15-08-2025

गौरव • जिंक से भीलवाड़ा खान एवं भूविज्ञान विभाग को मिलती है 1400 करोड़ की रॉयल्टी, 1991 से खनन शुरू, 2018 में खदान पूरी तरह भूमिगत हुई

बुर्ज खलीफा की ऊंचाई से भी ज्यादा गहरी रामपुरा - आगूंचा माइंस, यह दुनिया की पहली बड़ी भूमिगत खदानों में से एक

भास्कर न्यूज | भीलवाड़ा

राजस्थान के भीलवाड़ा जिले की हुरड़ा तहसील में स्थित हिन्दुस्तान जिंक की रामपुरा- आगूंचा खदान न सिर्फ भारत की बल्कि दुनिया की भी अग्रणी भूमिगत खदानों में से एक बन चुकी है। यहां जस्ता, सीसा का समृद्ध भंडार मौजूद है, जिसने इस खदान को वैश्विक पहचान दिलाई है। वर्तमान में यह खदान तकनीकी विकास और सस्टेनेबल खनन का अद्भुत उदाहरण है। इसकी गहराई 1050 मीटर है जो कि विश्व की सबसे बड़ी इमारत बुर्ज खलीफा जो कि दुबई में स्थित है से गहरी है। बुर्ज खलीफा की ऊंचाई 830 मीटर यानि 2722 फीट है, जबकि रामपुरा- आगूंचा स्थित खदान में शाफ्ट की गहराई 955 मीटर यानि 3133 फीट है। रामपुरा- आगूंचा माइंस में वर्तमान में 1050 मीटर पर खनन कार्य किया जा रहा है। इस खदान को भारत सरकार के खान मंत्रालय द्वारा फाइव स्टार माइन के रूप में प्रमाणित किया गया है।

रामपुरा- आगूंचा खदान की उत्पत्ति वर्षों पुरानी है, जब भू-वैज्ञानिकों ने खदान के पूर्व में लगभग 20 हैक्टेयर क्षेत्र में पाए गए स्तैग की रेडियो-कार्बन डेटिंग की थी। आगूचा खदान में सतह से एक और दो मीटर की दूरी पर पुराने वॉर्किंग्स से पता चलता है कि खदान तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान उत्पादन में थी। उस समय खनिज संपदा धरती के भूगर्भ में दबी हुई थी। खदान की क्षमता को जल्द ही चिन्हित किया यहां जस्ता और सीसा के विशाल भंडार थे। इसकी नींव अगस्त 1977 में भू वैज्ञानिक टीसी. रामपुरिया ने गारम्नेट की जांच के दौरान रखी। 1991 में खदान ओपन कास्ट माइन के रूप में संचालित थी। बाद में 2016 में अंडरग्राउंड खदान में खनन शुरू हुआ। खदान में 67 मिलियन टन अयस्क के भंडार हैं। खनन ग्रेड के लिहाज से देश की सबसे बड़ी जिंक खान है। लगभग 200 वर्ग किमी की इस खदान में 348 हैक्टेयर में विभिन्न प्रजाति के 6 लाख से अधिक पौधे लगे हैं।

देश की दूसरी माइन रेस्क्यू टीम का गौरव

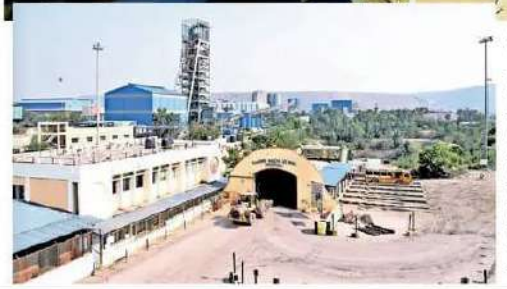

भूमिगत खनन के लिए रिमोट-नियंत्रित मशीनरी का उपयोग

रामपुरा- आगूंचा खदान से खेत्र की उन्नति हुई। जहां पहले मैन्युअल तरीके से खनन होता था, आज वहां कटिंग एज टेक्नोलॉजी से काम किया जा रहा है। गहराई में स्थित अयस्क तक पहुंच बनाने के साथ-साथ सुरक्षा को भी प्राथमिकता दी जा रही है। भूमिगत खनन के लिए रिमोट-नियंत्रित मशीनरी का उपयोग किया जा रहा है। मानव रहित वाहन संकरी सुरंगों में आसानी से चलते हैं। खदान में सटीक खनिज भंडार की पहचान के लिए भूवैज्ञानिक मानचित्रण तकनीकों का उपयोग करती है। उपग्रह इमेजरी और जमीन में अंदर तक जाने वाले रडार का उपयोग करते है। खदान में पानी की रीसाइक्लिंग कर शून्य डिस्चार्ज की तकनीक अपनाई जा रही है। खनन में पर्यावरणीय प्रभाव को न्यूनतम रखने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है, जैसे रिमोट-कंट्रोल्ड मशीनें और मानव रहित वाहन, उपग्रह इमेजरी और ग्राउंड पेनिट्रेटिंग रडार से खनिज मानचित्रण, जीरो डिस्चार्ज वॉटर रीसाइक्लिंग टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जाता है।

साढ़े पांच हजार से अधिक को रोजगार ... जिंक में साढ़े पांच हजार से अधिक को रोजगार मिल रहा है। इसमें राजस्थान से 85 प्रतिशत, भीलवाड़ा जिले से 65 प्रतिशत कर्मचारी शामिल है। जिंक से निकलने वाले मिनरल से भीलवाड़ा खान एवं भूविज्ञान विभाग को 1400 करोड़ की रॉयल्टी मिली है। हिन्दुस्तान जिंक की राजपुरा दरीबा माईंस के देश के पहली महिला रेस्क्यू टीम का गौरव हासिल करने बाद रामपुरा आगूचा माईंस में महिला रेस्क्यू टीम ने अपना प्रशिक्षण पूर्ण कर देश में दूसरी महिला माईंस रेस्क्यू टीम की उपलब्धी प्राप्त की हैं। रामपुरा- आगूंचा खदान का सुरक्षा में समावेशित और उत्कृष्टता की दिशा में ऐतिहासिक उपलब्धि है।

देश की पहली भूमिगत एम्बुलेंस यहां... रामपुरा- आगूंचा खदान में भारत का पहली भूमिगत एम्बुलेंस और प्राथमिक चिकित्सा स्टेशन सतह से 600 मीटर गहराई पर स्थित है। चव्वान दल और पैरामेडिकल स्टाफ भूमिगत खदान में 24 घंटे तैनात रहता है। अत्याधुनिक सुविधाओं और रिवाइविंग उपकरणों से लैस आपातकालीन वाहन हर समय उपलब्ध है।